दैनिक नवज्योति Anchal - 03 Dec 2020 - Page 8

शुष्क क्षेत्र में सतत खेती को बढ़ावा देना होगा : राजेन्द्र कुमार

नवज्योति/बाप।

ग्रामीण विकास विज्ञान समिति द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रम के तहत खेती को लेकर कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यशाला में बोलते हुए ग्राविस के वरिष्ठ कार्यक्रम समन्वयक राजेन्द्र कुमार ने कहा कि शुस्क क्षेत्र में खेती को बढावा देना होगा। यह कार्य किसानों के लिए लाभकारी साबित होगा। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन 21 वीं सदी की सबसे बड़ी चुनौती है। जलवायु परिवर्तन की मुख्य समस्या पृथ्वी का बढ़ता तापमान है, जो मौसम के संतुलन और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों के रूप में जीवाश्म ईंधन, वनों की कटाई, गहन कृषि, अपशिष्ट निपटान, खनन, अतिवृष्टि आदि जैसे कई मानवजनित गतिविधियों को जिम्मेदार ठहराया गया है। गहन कृषि तकनीक में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और पानी जैसे प्राकृतिक संसाधनों जैसे उत्पादक सामग्री का उपयोग करने की आवश्यकता होती है। आंकड़े से पता चलता है कि 1960-1961 में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग दो किलोग्राम प्रति हेक्टेयर था। जो 2016-17 में बढ़कर 165.85 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर हो

गया। खेती में रसायनों और संसाधनों का भारी उपयोग निम्न मृदा उत्पादकता, उदासीन, परती, भूमि क्षरण, जल स्तर में कमी, विविधता का क्षरण आदि के लिए जिम्मेदार है। यदि यह प्रवृत्ति जारी रहती है तो यह स्पष्ट है कि भविष्य में हमारी भूमि नहीं बन पाएगी। इसलिएए स्थायी कृषि में बदलाव करके संभावित समाधानों का पता लगाना अनिवार्य और आवश्यक है।

जोधपुर में स्थित पश्चिमी राजस्थान में किसानों को संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यान्वित फंडड़ परियोजना कृषि जैव विविधता संरक्षण और कृषि क्षेत्र में उपयोग को पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं को सुनिश्चित करने और भेद्यता कम

करने के लिए बायोवेसिटी इंटरनेशनल सहयोग से पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप मॉडल के लिए कृषि क्षेत्र में हल प्रदान कर रहा है। बाजरा और अन्य फसलें पर से तकनीकी बैकस्टॉपिंग प्राप्त की जा रही है

परियोजना का प्रयास कृषि और टिकाऊ उत्पादन में लचीलापन के लिए कृषि जैव विविधता के संरक्षण और उपयोग को मुख्यधारा में लाना है। यह परंपरागत उत्पादन प्रणाली में बढ़ती देशी फसलों और किस्मों द्वारा प्राप्त किया जा रहा है। यह प्रणाली मिट्टी की उर्वरता, फसल उत्पादन और मानव स्वास्थ्य में सकारात्मक सुधार करती है और विशेष रूप से पारिस्थितिकी तंत्र में सुधार करती है।

पश्चिमी राजस्थान परियोजना में चार चयनित कृषि इको क्षेत्रों में से एक है। इसे आमतौर पर थार रेगिस्तान के रूप में जाना जाता है। इस क्षेत्र में वर्षा कम होती है। इस प्रकारए अत्यधिक विशिष्ट फसलों को कम पानी की आवश्यकता होती है। बेसलाइन सर्वेक्षण करते हुए हमने देखा कि अभी कुछ देशी बीज और पारंपरिक तकनीकें उपलब्ध हैं और बहुसंख्यक विलुप्त हो चुके हैं। हमने इन देशी बीजों और पारंपरिक कृषि प्रणाली का उपयोग करते हुए मुश्किल से 5-7 प्रतिशत किसानों को पाया।